तैयारी प्रदेश में 528 ऑक्सीजन प्लांट की होनी है स्थापना, पीएम केयर्स फंड के प्लांट 15 अगस्त तक होंगे चालू

अब तक 114 ऑक्सीजन प्लांटों में उत्पादन शुरू

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। यूपी ऑक्सीजन के उत्पादन में आत्मनिर्भरता की ओर लगातार बढ़ रहा है। अभी तक 114 ऑक्सीजन प्लांटों में उत्पादन शुरू हो गया है। वहीं, सरकार ने पांच और नए प्लांट को मंजूरी दे दी है। इस तरह प्रदेश में कुल 528 ऑक्सीजन प्लांट की स्थापना होनी है।

गौरतलब है कि कोरोना की दूसरी लहर के दौरान प्रदेश में महज 25 ऑक्सीजन प्लांट थे। अब यह संख्या 114 हो गई है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पीएम केयर्स फंड के माध्यम से स्थापित किए जा रहे 188 ऑक्सीजन प्लांटों को 15 अगस्त तक चालू करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि इसकी मॉनीटरिंग के लिए नोडल अधिकारियों की तैनाती की जाए और प्लांट स्थापना से

जुड़े कार्यों की लगातार समीक्षा की जाए।

वहीं, राज्य सरकार 27, चीनी मिल व आबकारी विभाग 79 और बिल एंड मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन 10 और पाथ संस्था दो ऑक्सीजन प्लांट लगा रही है। इसी तरह सीएसआर फंड से 59, विधायक निधि से 37, स्टेट डिजास्टर फंड से 25 और सांसद निधि से 06 ऑक्सीजन प्लांट स्थापित किए जा रहे हैं। माना जा रहा है कि कोरोना की संभावित तीसरी लहर कोविड 19 के डेल्टा वैरिएंट की वजह से आएगा। यह कोविड वायरस के अन्य वैरिएंट से ज्यादा खतरनाक है। प्रदेश में ऑक्सीजन प्लांट की स्थापना से तीसरी लहर के दौरान संक्रमित होने वाले मरीजों के लिए ऑक्सीजन की कमी नहीं आने दी जाएगी। सरकार निजी मेडिकल कॉलेजों को भी ऑक्सीजन प्लांट स्थापित करने में मदद करेगी।

चार गुना हुई ऑक्सीजन उत्पादन क्षमता

प्रदेश में ऑक्सीजन उत्पादन की क्षमता दूसरी लहर के बाद से बढ़कर चार गुना हो गई है। कोरोना की दूसरी लहर के दौरान प्रदेश में ऑक्सीजन की कमी हो गई थी। उस दौरान प्रदेश में कुल 25 ऑक्सीजन उत्पादन प्लांट थे। इनमें से पांच कॉमर्शियल थे और अन्य मेडिकल कॉलेजों व चिकित्सा संस्थानों में निजी उपयोग के लिए थे। आमतौर पर 125 मीट्रिक टन की खपत वाले प्रदेश में दूसरी लहर के दौरान ऑक्सीजन की जरूरत कई गुना बढ़ गई थी। वर्तमान में सभी राजकीय व निजी मेडिकल कॉलेजों व जिला अस्पतालों में ऑक्सीजन प्लांट की स्थापना की जा रही है। मेडिकल कॉलेजों में पांच दिन का ऑक्सीजन बैकअप है। सरकार की कोशिश है कि अधिक क्षमता वाले लिक्विड ऑक्सीजन प्लांट प्रदेश के सभी बड़े शहरों में बनाए जाएं जिससे ऑक्सीजन की आपूर्ति की चेन बन जाए। वर्तमान में 350 मीट्रिक टन ऑक्सीजन उत्पादन की क्षमता प्रदेश में ही उपलब्ध है।